प्रकाशन तिथि : 15 जुलाई, 2020
प्रेषण तिथि : 19 जुलाई, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 09 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 'संघ शक्ति' में गीता पाठ

आषाढ की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। शिष्य अपने गुरु के दर्शन एवं सानिध्य लाभ प्राप्त कर पूजा अर्चना करते हैं एवं आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। संघ के स्वयंसेवकों के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ गुरु रूप में है। संघ के दर्शन का आधार भगवान श्री कृष्णोक्त गीता है। स्वामी अड़गड़ानंद जी कृत 'यथार्थ गीता' वर्तमान में गीता की सर्वमान्य टीका है एवं माननीय संघ प्रमुख श्री उन्हें अपना गुरु मानते हैं। इसी क्रम में संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में इस अवसर पर यथार्थ गीता का अखंड पाठ आयोजित किया गया। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी के सानिध्य में आयोजित यह गीता पाठ प्रातः 5 बजे प्रारम्भ होकर सायं 8.30 बजे पूर्ण हुआ। स्वामी अरविंद एवं उनकी मंडली द्वारा आयोजित इस अखंड पाठ में कोरोना जनित परिस्थितियों के कारण भौतिक दूरी के सभी नियमों का पालन किया गया। केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत भी इस गीता पाठ में शामिल हुए। माननीय संघ प्रमुख श्री इन दिनों बाड़मेर प्रवास पर हैं। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर वे अपने सहयोगियों सहित बाड़मेर में पूज्य स्वामी जी के आश्रम में पधारे एवं वहां आयोजित गुरु पूर्णिमा महोत्सव में शामिल हुए। भौतिक दूरियों के सभी दिशा-निर्देशों की पालना करते हुए संपन्न इस कार्यक्रम में स्वामी जी के शिष्य अकेलानंद जी ने गुरु पूर्णिमा का महत्व बताया एवं साधना मार्ग के संबंध में मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर स्वामीजी के चित्र की पूजा अर्चना की गई।

तथ्यों को दुरुस्त कराया जाएगा : मुख्यमंत्री

महाराणा प्रताप एवं मेवाड़ के इतिहास को लेकर पाठ्यक्रम में की गई तथ्यहीन टिप्पणियों के विरुद्ध चल रहे अभियान के तहत 8 जुलाई को मेवाड़ क्षेत्र के सामाजिक संगठनों का एक प्रतिनिधिमंडल परिवहन मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास के साथ मुख्यमंत्री महोदय से मिला एवं अपनी आपत्तियां प्रकट की। मुख्यमंत्री की प्रतिनिधिमंडल से चर्चा के बाद मुख्यमंत्री कार्यालय से जारी प्रेस नोट के अनुसार मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रताप हम सब के लिए प्रेरणास्रोत हैं और पाठ्यक्रम में तथ्यों से संबंधित जो शिकायत प्राप्त हुई हैं, उसकी जांच के लिए शिक्षा मंत्री एवं परिवहन मंत्री मिलकर कार्य करेंगे और उन तथ्यों में यदि गलती है तो उन्हें दुरस्त करवाया जाएगा।

इतिहास को विकृत करने का विरोध जारी

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10वीं व 12वीं की पुस्तकों में इतिहास विषयक सामग्री को लेकर विरोध जारी है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का अनुषंगिक संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन इस विषय पर शिक्षा विभाग की दुर्भावना के विरुद्ध जनमत निर्माण का अपना अभियान जारी रखे हुए है। इस अभियान में सामाजिक संगठनों, जनप्रतिनिधियों का समर्थन लेकर उनसे मुख्यमंत्री को पत्र लिखवाने का कार्य जारी है। इसी बीच पंजाब के राज्यपाल वी.पी.सिंह जी द्वारा राजस्थान के राज्यपाल महोदय को लिखे पत्र की अनुपालना में राज्यपाल महोदय की तरफ से भी एक समिति गठित किए जाने के प्रस्ताव के समाचार आए हैं। 2 जुलाई को एक साथ पूरे राजस्थान में 125 जगहों पर माननीय मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपने का निर्णय लिया गया एवं उसकी अनुपालना में 130 से अधिक स्थानों पर एक ही दिन में ज्ञापन दिए गए। समाज के लोगों का इसमें सहयोग सराहनीय रहा। गाड़िया लोहार समाज द्वारा भी इससे पहले 25 स्थानों पर माननीय मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपे गए। इस बीच शिक्षा विभाग द्वारा स्वयं ही अपनी जांच कर अपने आपको सही सिद्ध करने का समाचार भी समाचार पत्रों में छपा, उसके लिए भी समिति द्वारा आपत्तियों को खारिज करने के बिन्दुओं पर जवाब तैयार कर शिक्षा मंत्री को पत्र लिखा गया एवं उसकी प्रति मुख्यमंत्री एवं कांग्रेस नेतृत्व को भी भेजी गई। इससे पूर्व शिक्षा मंत्री द्वारा अभियान को भाजपा का अभियान कहने एवं इसे हिन्दू मुस्लिम स्वरूप देने पर भी विरोध प्रकट करते हुए शिक्षा मंत्री को पत्र लिखा गया। लेकिन इस बीच हमारे समक्ष एक प्रश्न खड़ा होना चाहिए कि हम यह विरोध क्यों करें? क्या हमारे विरोध करने से पाठ्यक्रम बदल जाएगा? इस प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता। हो सकता है बदल भी जाए और ना भी बदले। लेकिन हमारे विरोध का उद्देश्य केवल उस एक बदलाव को ठीक करवाना नहीं है बल्कि उस प्रवृत्ति का विरोध करना है जो हमारे इतिहास एवं संस्कृति के प्रति नकारात्मक है और दुर्भाग्य से वह हमारी शिक्षा व्यवस्था पर हावी रही है। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'बदलते दृश्य' में छापोली के सुजानसिंह शेखावत का उल्लेख किया है। इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

राजा बरसिंह देव के बाद उनके बड़े पुत्र बहादुर सिंह खण्डेला के राजा हुए। औरंगजेब की सेना के साथ दक्षिण में शिवाजी के विरूद्ध अभियान में इन्होंने भाग लिया था, वहां औरंगजेब के एक सेनानायक बहादुर खां से अनबन पर शाही सेना छोड़कर ये खण्डेला आ गए। इससे नाराज औरंगजेब ने वि.सं. 1732 में बिरहम खां के नेतृत्व में एक सेना भेजी। इस युद्ध में बिरहम खां की पराजय हुई और उसका खास सहायक अमीर मंसूर पकड़ा गया। इस पराजय से कुपित औरंगजेब ने कुछ वर्ष पश्चात् वि.सं. 1736 में कारतलब खां, बिरहम खां और दाराब खां के अधीन एक बड़ी सेना बहादुर सिंह को बंदी बनाने और खण्डेला के देवालयों को नष्ट करने के लिए भेजी। बहादुर सिंह अपने दरबारियों की सलाह से छापामार युद्ध के लिए खण्डेला को अरक्षित छोड़कर पहाड़ों में चले गए।

भोजराज के वंशज सुजानसिंह छापोली इस समय मारवाड़ से विवाह उपरान्त नववधु के साथ छापोली लौट रहे थे। मार्ग में उन्हें खण्डेला के अरक्षित होने और यवन सेना के देवालय तोड़ने के लिए आने के समाचार प्राप्त हुआ। यवन सेना के देवालय तोड़ने के लिए आने की बात सुनते ही उनके नेत्र क्रोध से रक्तिम हो गए, वीरत्व का तेज उफन पड़ा, क्षत्रियत्व जाग उठा। सुजानसिंह ने अपने घोड़े का मुख खण्डेले की ओर मोड़ दिया तब परिवार के कुछ सदस्यों ने उन्हें वधु के साथ छापोली जाने का आग्रह करते हुए कहा कि आप छापोली जाओ, मंदिर रक्षा के लिए हम खण्डेले जाते हैं। यह सुनते ही सुजानसिंह का प्रत्युत्तर था क्या मैंने क्षत्रिय परिवार में जन्म नहीं लिया, क्या मैं रायसल के भोजराज के वंशधरों में नहीं जो कि यवन सेना मदन मोहन जी का मंदिर तोड़ने आए और मैं वधु के साथ रनिवास में चला जाऊं। सुजानसिंह के दृढ़ संकल्प को देखकर वधु को छापोली के लिए रवाना कर दिया गया। सुजानसिंह अपने साठ साथियों के साथ खण्डेला मदन मोहन जी के मंदिर रक्षार्थ आ गए। यवन सेनापति कारतलब खां और दाराब खां को जब पता चला कि सुजानसिंह अपने साथियों के साथ मंदिर रक्षा के लिए आ गया है तो यवन सेना को राजपूती तलवार से बचाने के लिए उसने सुजानसिंह को संदेश भिजवाया कि हम तो सम्राट की आज्ञा पालन हेतु आए हैं, तुम हमें मात्र मंदिर का कलश उतारने दो, हम बिना युद्ध किए, बिना मंदिर के हाथ लगाए वापिस लौट जाएंगे। सुजानसिंह ने यवन सेनापति को कहलवाया कि जब तक सुजानसिंह के धड़ पर मस्तक है, कोई मंदिर का कलश उतार नहीं सकता और सुजान सिंह का मस्तक उतरने से पहले सैंकड़ों यवन के मस्तक उतरेंगे। प्रातःकाल में यवन सेना मंदिर विध्वंस के लिए जैसे ही आगे बढ़ी, सुजानसिंह अपने साथियों के साथ यवन सेना पर टूट पड़े। सुजानसिंह और उनके भतीजे इन्द्रभाण (मुंडरो के हरिराम के पौत्र) ने शत्रु सेना को लय-ताल के साथ काटना शुरू कर दिया। दोनों ने एक-दूसरे से स्पर्धा करते हुए यवनों को एक-एक कर यमपुरी भेजने लगे। सैंकड़ों यवनों को मौत के घाट उतारते हुए सुजानसिंह अपने साथियों के साथ असिधारा में स्नान करते हुए वि.सं. 1736 के वैशाख माह के कृष्ण पक्ष की सप्तमी को त्याग और बलिदान की गौरवमयी परम्परा को उज्जवलित करते हुए व आने वाली पीढ़ी को स्वधर्म पालन का पाठ पढ़ाते हुए स्वर्गारोहण कर गए। सुजानसिंह के लिए किसी कवि ने कहा :

कुरम् खण्डेले कमध् मेड़ते,
मरण् तणो बाध्यो सिर मोड़।
सुजे जिसो नहीं जग् शेखे,
राजड़ जिसो नह राठौड़।।
दाता मंदिर शीश दियो,
आता दल अवरंग्।
इण् वातां सुजो अमर,
रायसलोता रंग्।।

- खींवसिंह सुल्ताना

राजा मानसिंह की जयंती मनाई

मध्यकालीन मुस्लिम सल्तनतों के काल में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मूल्यों को बचाने के लिए विविध प्रकार से प्रयास हुआ। महाराणा प्रताप, दुर्गादास, दुर्गावती, चन्द्रसेन आदि स्वाभिमानी वीरों ने उनसे सीधा संघर्ष कर इन मूल्यों को बचाने के लिए सर्वोच्च बलिदान का मार्ग अपनाया वहीं कुछ लोगों ने राजनीतिक समझौतों के द्वारा उनका प्रत्यक्ष सहयोग कर परोक्ष रूप से उन मूल्यों को बचाने में योग दिया। हालांकि भारतीय जनमानस उनके इस समझौतापूर्ण रवैये को सर्वात्मना स्वीकार नहीं करता लेकिन फिर भी निरपेक्ष विश्लेषण किया जाए तो भारतीय संस्कृति के मान बिन्दुओं की रक्षा में उनके योगदान को भी नजरदांज नहीं किया जा सकता। ऐसे ही एक व्यक्तित्व आमेर के तत्कालीन शासक मानसिंह हैं। राजनीतिक मजबूरियों के चलते आमेर को मुगलों से समझौता कर उनका सहयोगी बनना पड़ा लेकिन उनके साथ रहते हुए भी आमेर के शासकों ने भारतीयता को बचाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

राजा मानसिंह ने अकबर की छद्म धर्म परिवर्तन की योजना 'दीन ए ईलाही' को असफल कर महत्वपूर्ण काम किया। उन्होंने भारत के कौने-कौने में स्थापित अफगानों की सत्ता को नेस्तनाबूत किया और अंत में अफगान सत्ता के केन्द्र अफगानिस्तान को भी पराजित किया। उन्होंने भारत भर में अलग-अलग स्थानों पर मंदिरों का निर्माण करवाया, पुराने मंदिरों का पुनरुद्धार करवाया। हिन्दुओं पर लगने वाले जजिया कर को हटवाया। विभिन्न सन्त महात्माओं को संरक्षण प्रदान किया। इस प्रकार उस युग में सनातन धर्म की रक्षार्थ उन्होंने महत्वपूर्ण काम किए। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने उन्हें सोना कहा है लेकिन राजनीतिक मजबूरियों के चलते उनका अकबर जैसे साम्राज्यवादी का सहयोगी बनना उस सोने पर लगे जंग के समान माना है। उनकी यह एक कमी उनके उत्कृष्ट व्यक्तित्व पर छाया बन गई। लेकिन फिर भी उनकी विशेषताओं को नकारा नहीं जा सकता। इसी क्रम में विगत वर्षों से उनकी जयंती एवं पुण्यतिथि पर उनकी विशेषताओं को याद करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसी उपलक्ष में 6 जुलाई को विभिन्न स्थानों पर उनकी 406वीं पुण्यतिथि मनाई गई।

रामदेवरा (जैसलमेर) निवासी प्रेम कंवर पुत्री मूलसिंह तंवर ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 86.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पुंदलसर निवासी राजवीरसिंह पुत्र भूपसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 81.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

कोटडा (बाड़मेर) निवासी किरण कंवर पुत्री अभयराजसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 86.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

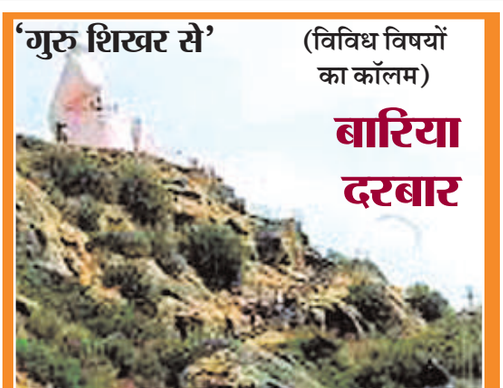

बारिया दरबार

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

रियासत बारिया देवगढ़ आजादी पूर्व रेवा कांठा एजेन्सी के बोम्बे प्रेजिडेन्सी का भाग थी। आज यह दक्षिणी गुजरात के पंचमहल के दाहोल जिले का भाग है। बारिया देवगढ रियासत के पूर्वज गुजरात की प्रसिद्ध चांपानेर रियासत के रावल पटाई (खींची चौहान) राजपूत हैं। चांपानेर के राजा रावल रायसिंह के एक पुत्र ने छोटा उदयपुर तथा द्वितीय पुत्र डूंगरसिंह ने ई. 1524 में रेवा कांठा क्षेत्र में बारिया राज्य की नींव रखी। बारिया 495 गांवों के 2016 किलोमीटर क्षेत्र में फैली रियासत थी। यहां के दरबार को महारावल की पदवी मिली थी तथा 9 तोपों की सलामी दी जाती थी। बारिया रियासत के अन्तिम राजा महारावल जयदीपसिंह जी थे। ये बारिया के 17वें शासक थे। इनके दादा महारावल रणजीतसिंह ने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया था। इनके पिता महारावल सौभागसिंह तथा माता त्रिपुरा के महाराजा बिरेन्द्र किशोर देव वर्मन की राजकुमारी थी। जयदीपसिंह का जन्म 1929 में हुआ तथा वे 1948 से 1987 तक बारिया राजपरिवार के मुखिया रहे। आपकी शिक्षा युवराजों के लिए प्रसिद्ध रही शिक्षण संस्था मेयो कॉलेज अजमेर से हुई। आपका विवाह 27 मई 1948 को जयपुर के प्रसिद्ध महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय व जोधपुर की राजकुमारी महारानी मरूधरा कंवर की सुपुत्री राजकुमारी प्रेमकुमारी से हुआ। आप बारिया रियासत के प्रजावत्सल शासक माने जाते रहे। आपके परिवार का आजादी के बाद भी जनता से गहरा लगाव रहा। बारिया के लोग उन्हें बड़ा आदर देते थे एवं संरक्षक मानते थे। वे जनता में राजयोगी के रूप में माने जाते थे। इन्होंने अपनी सम्पतियों को शैक्षणिक कार्य व खेलों के लिए समर्पित कर दिया। आपने एक राजमहल में उनके पिताजी के नाम से कॉलेज खोला। स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स बनाने के लिए अपना जिम खाना दे दिया। महारावल खुद पोलो, टेनिस व क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी रहे। वे भारतीय ऐथलेटिक्स फैडरेशन के अध्यक्ष चुने गए। ओलंपिक एशियाई खेलों में कमेंट्री के सदस्य रहे तथा प्रतिनिधि बनकर गए। आपके कारण बारिया खेलों के क्षेत्र में गुजरात में प्रसिद्ध रहा। गुजरात सरकार उत्तम दर्जे के राज्य स्तरीय खिलाड़ियों को 'श्री जयदीप सिंह बारिया' पुरस्कार देती है। आपका तथा आपके परिवार का राजनीतिक वास्ता भी लम्बा रहा है। आप बारिया नगर पंचायत के प्रमुख रहे। तीन बार विधायक एवं एक बार लोकसभा सांसद रहे। तीसरी विधानसभा में विरोधी पक्ष के नेता रहे। गुजरात सरकार में कृषि एवं स्वास्थ्य मंत्री रहे। गुजरात पर्यटन विभाग के अध्यक्ष रहे। आपने श्रीमती इंदिरा गांधी एवं श्री राजीव गांधी से संचार क्रांति के जनक सेम पित्रोदा को मिलवाया था जिसका जिक्र सेम ने अपनी आत्मकथा में किया है। आपकी पुत्री उर्वसी देवी उर्फ राजकुमारी बाम्बी का विवाह बिहार के डूमराव रियासत के परमार गौत्रिय दून स्कूल देहरादून से पढे एवं भारतीय सेना में विंग कमांडर रहे महाराजा कनकसिंह से हुआ। राजकुमारी उर्वसी देवी भी सामाजिक कार्य एवं राजनीति में सक्रिय रही। वे बारिया से विधायक एवं गुजरात सरकार में मंत्री रही। महारावल जयदीपसिंह के दौहित्र तुषार सिंह भी बारिया की राजनीति में सक्रिय है तथा जनता में बाबा साहेब के सम्बोधन से जाने जाते हैं। वे भी बारिया से विधायक रहे हैं तथा अभी भारतीय जनता पार्टी के सक्रिय नेता हैं। बारिया दरबार महारावल जयदीपसिंह का 1987 में देहावसान हो गया।

इतिहास को विकृत करने का विरोध जारी

जैसलमेर

जोधपुर

जैसलमेर

(पृष्ठ एक से लगातार)

हमारा लक्ष्य उस प्रवृत्ति के खिलाफ जनमत तैयार करना है। सत्ता में बैठे नकारात्मक लोगों तक यह संदेश पहुंचाना है कि हम जागरूक हो रहे हैं, अब आप अपनी मर्जी से बदलाव करते हैं, अपने अहंकार और हीनभावना की तृष्टि के लिए बदलाव करते हैं तो आपका विरोध किया जाएगा, आपके खिलाफ जनमत तैयार किया जाएगा एवं आपको आमजन प्रश्न पूछेंगे जिसका आपको जवाब देना पड़ेगा, अपने कृत्य का औचित्य भी बताना पड़ेगा। आजादी के बाद से ही अंग्रेज मानसिकता के लोगों ने हमारे इतिहास को विकृत कर उसे स्कूली पाठ्यक्रमों के सहारे प्रमाणिक बनाने का प्रयास किया और उसी का परिणाम हुआ कि नई पीढ़ी वास्तविक इतिहास से दूर हो गई।

अनेक लोग कहते हैं कि स्कूल में पढ़ाने से क्या होता है, हम अपना वास्तविक इतिहास तो जानते हैं। लेकिन आप रुचि रखते हैं इसलिए खोजते हैं या जानते हैं लेकिन सामान्य व्यक्ति ने तो वही पढ़ा है जो उसे विद्यालयों में पढ़ाया गया है और ऐसे में यदि वह अतिरिक्त प्रयास कर जानने में प्रवृत्त नहीं हो तो उसे ही सत्य मानेगा। ऐसे में हमारा विरोध कम से कम उसे जागृत करता है कि आप जो पढ़ रहे हो वह मजबूरी वश तुम्हें पढ़ना पड़ रहा है या पढ़ाना पड़ रहा है लेकिन वास्तव में वह सही नहीं है बल्कि दुर्भावना वश तुम्हे गलत पढ़ाया जा रहा है। ऐसे में कम से कम वह एकतरफा सत्य तो नहीं मानेगा। इसलिए इस प्रकार के दुर्भावना पूर्ण कृत्यों का सफलता असफलता की चिंता किए बिना विरोध करना आवश्यक है। अगला बड़ा कारण यह है कि ऐसा अभियान हमें स्वयं को हमारे इतिहास के प्रति जागरुक करता है। इस अभियान के दौरान अनेक लोगों की ऐसी प्रतिक्रिया आई कि हमें तो पता ही नहीं कि वास्तविकता यह थी? अर्थात जिन लोगों ने अपने आपको इतिहास अध्ययन से अलग मान लिया था, इतिहास में कोई रुचि नहीं थी, उनमें अपने इतिहास के प्रति रुचि पैदा हुई, जागरुकता आई। इसलिए हम कितना बदलवा पाते हैं इस परिणाम की चिंता किए बिना हमें हमारे इतिहास के साथ होने वाले खिलवाड़ का विरोध करना चाहिए और फाउण्डेशन का यह अभियान इसी लक्ष्य को लेकर चलाया जा रहा है। एक और पहलु यह है कि हमारा विरोध स्थापित हो चुके निराधार लक्ष्यों को नकारने के लिए जनता को जागृत करता है। उदाहरणार्थ महाराणा सांगा के बारे में किसी समय बताया जाता था कि उन्होंने बाबर को लोदी को आमंत्रित किया था लेकिन कालांतर में इसका विरोध होने पर यह बात नकारी गई और इस प्रकार की मान्यताओं को निराधार घोषित किया गया । इसलिए गलत का विरोध होना आवश्यक है। 11 जुलाई को फाउंडेशन की जैसलमेर टीम ने जैसलमेर स्थित संघ कार्यालय 'तनाश्रय' में प्रेस वार्ता कर उमादे भटियाणी एवं मालदेव के विषय में भ्रामक जानकारी देने पर आपत्ति दर्ज करवाई। विभिन्न इतिहासकारों के मतों को संदर्भ के रूप में प्रस्तुत कर यह बताया गया कि लूणकरण द्वारा मालदेवजी को मरवाने की बात निराधार एवं तथ्यहीन है। इस प्रेस वार्ता में वरिष्ठ इतिहासकार नंदकिशोर शर्मा, बालकिशन जोशी, ओमप्रकाश भाटिया भी फाउंडेशन की जैसलमेर टीम के साथ उपस्थित रहे।

चित्तौड़गढ़

झुंझुनूं

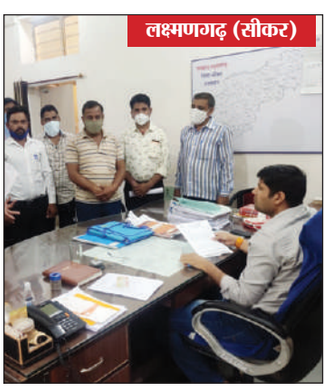
लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

खींवसर

रीयाबाड़ी (नागौर)

विकृतियों का पाठ्यक्रम

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10वीं व 12वीं की इतिहास की पुस्तकों में अनेक विकृत जानकारियां दी गई हैं जिनके पीछे यह लगता है कि शिक्षा विभाग जान बूझकर हमारे इतिहास को विवादित रूप में पेश कर उसकी उज्ज्वलता के प्रति अपनी कुंठा को शांत कर रहा है। मेवाड़ के इतिहास में महाराणा प्रताप, महाराणा उदयसिंह, हल्दीघाटी, चेतक, कृष्णा कुमारी विवाद आदि के बारे में तो पहले से ही चर्चा चल रही है। लेकिन मारवाड़ के इतिहास को भी नहीं छोड़ा गया है। कक्षा 10वीं की पुस्तक में राठौड़ों की उत्पत्ति के बारे में उल्लेख करते हुए उन्हें हिरण्यकश्यप की संतान बताया गया है जबकि ऐसा कोई ज्ञात तथ्य चर्चा में नहीं है। पौराणिक वंशावलियों के अनुरूप राठौड़ सूर्यवंशी माने जाते है जबकि हिरण्यकश्यप दैत्यवंशी था और महर्षि कश्यप की अन्य पत्नी दिति की संतान था। इसी प्रकार उमादे भटियाणी के बारे में इसी पाठ में लिखा गया गया है कि वे मालदेव से इसलिए रूठी थीं कि उनके पिता लूणकरण मालदेव जी को मरवाना चाहते थे। जबकि ख्यातिनाम इतिहासकारों ने ऐसे किसी कारण का उल्लेख नहीं किया है। फिर यदि यह कारण माना जाए तो उमादे मालदेव जी से क्यों नाराज होतीं बल्कि अपने पिता लूणकरण जी से नाराज होती अथवा मालदेव जी उमादे से नाराज होते लेकिन ऐसा नहीं हुआ उमादे की नाराजगी का कारण उनके पति का चारित्रिक दोष था और वे नारी शक्ति की अद्भुत मिशाल थी जिन्होंने मालदेव जी जैसे शक्तिशाली शासक से विवाह करके भी उनके साथ नहीं गई और जीवन भर ब्रह्मचारिणी रहकर भी उनके साथ सती हुई। इसी प्रकार कक्षा 10वीं की पुस्तक में ही गोगाजी चौहान के बलिदान का कारण उनके मौसेरे भाईयों के साथ संपत्ति विवाद बताया गया है जबकि वह विवाद तो उनके बलिदान से पहले ही निपट गया था एवं उनका बलिदान तो सोमनाथ को लूटकर जाते गजनवी से संघर्ष के दौरान हुआ था। इस प्रकार यह लगता है कि पाठ्यक्रम में जानबूझकर हमारे उज्ज्वल नायकों को कम कर आंका गया है। वहीं तैमूर लंग और चंगेजखान जैसे क्रूर लूटेरों का कक्षा 12वीं की पुस्तक में उल्लेख करते हुए उन्हें महान विजेता बताया गया है। इस प्रकार पूरी कवायद एक विकृत मानसिकता के कारण लगती है। पूरा समाज इस पर विभिन्न माध्यमों से रोष प्रकट कर रहा है।

संपादकीय

'क्यों पढ़ा जाता है इतिहास'

राजस्थान में पाठ्यक्रम में इतिहास के प्रस्तुतीकरण को लेकर बवाल मचा हुआ है। सत्ता की ताकत के बल पर व्यक्ति विशेष अपनी पसंद-नापसंद को थोपने की हठधर्मिता पाले हुए है और इसके लिए अपने संवैधानिक पद की गरिमा का भी ध्यान नहीं रखा जा रहा है। एक टेलीविजन चैनल पर इस विषय को लेकर चल रही बहस के दौरान एक सज्जन कह रहे थे कि इतिहास तो तथ्य होते हैं, वह अच्छा या बूरा नहीं होता या उसमें कोई श्रेष्ठ या नेष्ठ नहीं होता। ऐसे में वक्तव्य प्रायः जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों के आते रहते हैं कि हमने तो जो तथ्य है उनकी बात की है, इसमें अच्छा या बूरा क्या? ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक हो जाता है कि आखिर इतिहास क्यों पढ़ना चाहिए? क्या इतिहास को पढ़ाने या पढ़ने का उद्देश्य कुछ जानकारियां एकत्र करना मात्र है? क्या कुछ तिथियों को रट लेना या कुछ नामों को याद करना ही इतिहास के अध्ययन का उद्देश्य है? क्या कुछ जानकारियों के बल परीक्षा पास करना या किसी प्रतियोगी परीक्षा में प्रश्नों के जवाब देना ही इतिहास के अध्ययन का लक्ष्य है? यदि गहराई से एवं गंभीरता से सोचें तो इतिहास के अध्ययन का लक्ष्य यह नहीं है। लेकिन जिनकी नजर में शिक्षा का अर्थ मात्र कुछ जानकारियों का संग्रह रह गया है उनकी नजर में तो यही लक्ष्य है और वे इन्हीं नजरों से इतिहास को देखते हैं। उनकी यह अधूरी एवं अपरिपक्व सोच जिस प्रकार शिक्षा के अर्थ को सीमित कर रही है, उसी प्रकार उन्होंने इतिहास के अर्थ को भी सीमित कर दिया है। लेकिन वास्तव में इतिहास क्यों पढ़ा जाना चाहिए, यह महत्वपूर्ण प्रश्न है। मानव व्यवहार का अध्ययन व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए प्रेरणा लेने हेतु आवश्यक है। विज्ञान के भौतिक स्वरूप को अलग रखे तो मानव व्यवहार का अध्ययन अपने आप में एक विशिष्ट प्रकार का विज्ञान है। मानव सभ्यता के विकास का अध्ययन मानव व्यवहार के अध्ययन में समाहित है। यदि मानव के व्यवहार के अध्ययन को शिक्षा में से अलग कर दिया जाए तो समस्त शिक्षा शुष्क गणनाओं और रसायनों के मिश्रण तक सीमित होकर रह जाएगी। ऐसी शुष्कता सम्पूर्ण सृष्टि को नीरस बनाकर एक यंत्र मात्र बनाकर रख छोड़ेगी। ऐसे में मानव की मानव के साथ, मानव की समाज के साथ, मानव की अन्य जीवों के साथ एवं मानव की प्रकृति के साथ अंतःक्रियाओं का अध्ययन नितांत आवश्यक है और इतिहास का अध्ययन इन अंतःक्रियाओं को समझने में सहायता करता है। वास्तव में इतिहास के एक अच्छे विद्यार्थी के लिए कुछ तारीखों को रट लेना या कुछ घटनाओं को स्मरण कर लेना ही महत्वपूर्ण नहीं होता बल्कि उन घटनाओं में मानव के व्यवहार का अध्ययन महत्वपूर्ण होता है, उस व्यवहार के कारणों की तह में जाना महत्वपूर्ण होता है, उस व्यवहार के परिणामों की समीक्षा करना महत्वपूर्ण होता है और तदनुसार भविष्य के लिए स्वयं के एवं संसार के व्यवहार का निर्देशन करना महत्वपूर्ण होता है। लेकिन भौतक विज्ञान एवं गणित की गणनाओं से उलझे आज के हमारे भाग्य विधाता (?) इतिहास को भी वैसे ही संख्याओं एवं सूत्रों को याद करने तक सीमित कर देते हैं और इसीलिए इतिहास अध्ययन विकृतिपूर्ण होता जा रहा है। आज के अर्थ युग में सर्वाधिक उपेक्षित विषय इतिहास होता जा रहा है। शिक्षा की नीति निर्धारित करने वाले यदि सर्वाधिक उपेक्षित किसी विषय को रखते हैं तो इतिहास को रखते है क्योंकि उनकी नजर में इतिहास कुछ सूचनाओं का संग्रह मात्र होता है और ऐसी सूचनाओं का उनकी नजर में क्या महत्व जो बीत चुकी हैं। इसलिए वे इसे कम महत्व, का मानते हुए अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए इसका उपयोग करते हैं और इसे विवादित बनाने में भी संकोच नहीं करते। लेकिन इतिहास के अध्ययन का वास्तविक उद्देश्य विगत में पूर्वजों के व्यवहार का विश्लेषण कर उनमें सीख लेकर आगे बढ़ना होता है। इस दृष्टिकोण से इतिहास का सर्वोत्कृष्ट उपयोग उसको शिक्षक मानने से होता है। वास्तव में इतिहास होता भी एक शिक्षक ही है। जिन लोगों ने उसे शिक्षक मानकर अतीत में हुई घटनाओं का ईमानदार विश्लेषण कर सीख ली, उनको अपने व्यवहार को सम्यक बनाने में उल्लेखनीय सहयोग मिला है। जिन विश्लेषण कर्ताओं ने अतीत में पूर्वजों के व्यवहार का निरपेक्ष मूल्यांकन कर उसके गुण दोष को आधार बनाकर संसार को दिशा देने का उद्यम किया, वे संसार के मार्गदर्शक बनकर उभरे। उन्होंने भटकती जहां को मार्ग दिखाया है। इसलिए इतिहास का अध्ययन मात्र कुछ सूचनाओं के संकलन, अपने अहंकार की तुष्टि या अपनी हीन भावना जन्य आत्म लघुत्व को छिपाने के लिए नहीं करना चाहिए बल्कि उसको शिक्षक मानकर निरपेक्ष भाव से अपने अंतरावलोकन में उसको सहायक बनाना चाहिए। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ में इतिहास का अध्ययन 'हमारा ऐतिहासिक अंतरावलोकन' के रूप में किया जाता है। ना तो इतिहास के सहारे अहंकार पालने की बात होती है और ना ही इतिहास में हुई भूलों के कारण हीन भावना से ग्रसित हो आत्म लघुता की ओर बढ़ने की बात की जाती है बल्कि विशुद्ध रूप से विभिन्न परिस्थितियों में मानव व्यवहार की केस स्टडी के रूप में इतिहास का अध्ययन किया जाता है और हमारे जीवन में उस प्रकार की परिस्थितियां आने पर किए जाने वाले आदर्श व्यवहार की भूमिका तैयार की जाती है।

खरी-खरी

संघर्ष का स्वरूप और आक्रामकता

राजपूत एक सैनिक कौम रही है। सैनिक और युद्ध का निकट संबंध होता है। युद्ध में आक्रमकता आवश्यक होती है इसलिए स्वभावतः हम आक्रमक होते हैं। हमारी यह आक्रामकता गाहे बगाहे प्रकट होती रहती है। आक्रामकता अपने आप में गुण है लेकिन यदि इसको उपयुक्त तरीके से उपयोग नहीं किया जाए तो यह अवगुण बन जाती है, कमी बन जाती है और असफलता का कारण भी बन जाती है।

राष्ट्र की रक्षार्थ युद्ध के लिए गठित सेना में आज हमारा एकाधिकार नहीं रहा इसलिए अब पूर्व की भांति हम सैनिक भी नहीं रहे हैं लेकिन युद्ध तो हमें अब भी लड़ने पड़ते हैं। संघर्ष के अवसर व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप में प्रायः उपस्थित होते रहते हैं। ऐसे सभी अवसरों पर हमारी आक्रामकता प्रकट होती है। हम सरकारों को शॉर्ट टाईम अल्टीमेटम देना शुरू कर देते हैं। राजनीतिक पार्टियों को धमकाने लगते हैं। सीधे ही अंतिम विकल्प का उपयोग करने की योजना बना लेते हैं और उसकी घोषणा भी कर देते हैं। परिणाम स्वरूप हमारे पास पीछे हटकर वार करने का अवसर नहीं रहता। हमारी बात के प्रति सरकार, पार्टियां, प्रशासन व मीडिया गंभीर नहीं होता। हमारा मुद्दा आमजन का विषय नहीं बन पाता और परिणाम स्वरूप हमारा संघर्ष कमजोर हो जाता है। यहां आकर हमारी उक्त आक्रामकता हमारे संघर्ष के लिए हानिकारक सिद्ध हो जाती है। ऐसे में हमारे सामने प्रश्न खड़ा होता है कि हमारी एक विशेषता को हमारे लिए नुकसानदायक होने से कैसे बनाया जाए? इसके लिए हमें पहले तो यह समझ लेना चाहिए कि आज संघर्ष का प्रारूप बदल गया है। सरकारें या राजनीतिक दल उस संघर्ष में पीछे हटती है जिसमें उनके मतदाताओं में उनकी पैठ पर चोट होती है। यह तब होती है जब हमारे संघर्ष में अधिक लोग शामिल हों, हमारा विषय केवल हमारा ही विषय न बनकर अन्य समुदायों का विषय बने। हमारे विषय को जितना अधिक जन समर्थन मिलेगा वह उतना ही प्रभावी बनेगा। इसके लिए हमें हमारी आक्रामकता के साथ धैर्य को जोड़ना पड़ता है, ऐसे कार्यक्रम बनाने पड़ते हैं जिसमें अन्यों को भागीदार बनाया जा सके। यह समय लेने वाला तरीका है और यदि हम उतावलापन दिखाएंगे तो ऐसा संभव नहीं है। ऐसे में हम जिस सत्ता से संघर्ष कर रहे हैं उसको शॉर्ट टाईम अल्टीमेटम देने से बचना चाहिए क्यों कि उक्त दिए गए अल्टीमेटम को हम लागू नहीं कर पाते और हमारा संघर्ष कमजोर पड़ता है। आमजन को हमारे संघर्ष में शामिल करने के लिए यह भी आवश्यक है कि हम संघर्ष के किसी ऐसे तरीके को नहीं अपनाएं जिसमें आमजन को परेशानी झेलनी पड़े। ऐसा करने से हम हमारे मुद्दे के प्रति आमजन की सहानुभूति खोते हैं जो हमारे संघर्ष को कमजोर करती है। विशेष बात यह ध्यान में रखने की होती है कि यदि हमारे संघर्ष के कारण कानून व्यवस्था की कोई भी समस्या खड़ी होती है तो सरकारों को हमारे संघर्ष को समाप्त करने का अपेक्षित बहाना मिल जाता है और हम असफल होते हैं।

हमारे संघर्ष का प्रारूप थका देने वाला भी नहीं होना चाहिए बल्कि कम ऊर्जा खर्च करने वाला होना चाहिए क्योंकि आजकल की सरकारों के कानों में जूं बड़ी मुश्किल से रेंगा करती है, इसके लिए लंबे संघर्ष की आवश्यकता होती है। हमारा संघर्ष लंबा चले इसके लिए आवश्यक है वह थकाने वाला नहीं हो अन्यथा हमारा सहयोग करने वाले हमारे से किनारा कर लेंगे। इसलिए उसका स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिसमें शामिल व्यक्ति अपने दैनिक जीवन के समस्त कार्य करते हुए हमारा सहयोग कर सके। इस प्रकार के अनेक बिन्दु हो सकते हैं जिनके सहारे हम उचित विषयों पर लंबा संघर्ष कर सकते हैं। लेकिन प्रायः हम ऐसा नहीं कर पाते क्यों कि इस प्रारूप में नेता बनने की भूख को किनारे करना पड़ता है। स्वयं की अपेक्षा समूह को महत्त्व देना पड़ता है। मीडिया की चकाचौंध से दूर रहना पड़ता है, प्रसिद्धि के मोह को छोड़ना पड़ता है, व्यक्तिगत स्वार्थों को तिलांजलि देनी पड़ती है, स्वयं की अपेक्षा साथियों को आगे करना पड़ता है और इन सबके लिए अपने आपको तरासना पड़ता है। अपनी वृत्तियों के संयमित करना पड़ता है। अपने अहंकार को सामाजिक स्वाभिमान में निमज्जित करना पड़ता है, सामाजिक स्वार्थ को स्वयं का स्वार्थ बनाना पड़ता है और इन सबके लिए स्वयं को मांजना पड़ता है। ऐसे में जो स्वयं को मांजे बिना समाज का नेतृत्व करने को तैयार होते हैं वे स्वयं के साथ साथ समाज को भी पीछे धकेलते हैं। सैनिक का समर्पण जिनमें नहीं हो, वे यदि सेनापति बनेंगे तो समाज के लिए भी समर्पित नहीं हो पाएंगे क्योंकि उन्होंने समर्पण तो सीखा ही नहीं है, अनुकरण करना तो सीखा ही नहीं है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का दर्शन कहता है कि पहले हम कार्यकर्ता बन समर्पित होना सीखें तब ही नेता बनकर हम समाज के प्रति समर्पण भाव से काम कर पाएंगे और ऐसे में हमारा संघर्ष उपर्युक्त मानदंडों पर खरा उतर सकेगा।

वेबिनार : एसएससी परीक्षा का परिचय एवं तैयारी

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा युवाओं के लिए विभिन्न विषयों पर वर्चुअल मार्गदर्शन कार्यशालाओं के आयोजन के क्रम में रविवार 5 जुलाई, 2020 को 'एसएससी : मुलभूत जानकारियां' विषय पर वेबिनार का आयोजन हुआ। वेबिनार में बैंगलोर में जी.एस.टी. विभाग में अधीक्षक के पद पर कार्यरत बाबू सिंह बालावत (SSC 2010 बैच), बैंगलोर में ही जी.एस.टी. विभाग में निरीक्षक के पद पर कार्यरत लोकेन्द्र सिंह राठौड़ (SSC 2014 बैच), मुम्बई में महालेखापरीक्षक कार्यालय के अंतर्गत सहायक अंकेक्षण अधिकारी के पद पर कार्यरत रणजीत सिंह आलासन (SSC 2011 बैच) और गांधीनगर (गुजरात) में केंद्रीय लोक निर्माण विभाग में सहायक लेखा अधिकारी के पद पर कार्यरत अभय सिंह रोडला (SSC 2010 बैच) ने एसएससी परीक्षा के विभिन्न आयामों को सामने रखा। सर्वप्रथम एसएससी की पृष्ठभूमि और कार्यों पर चर्चा करते हुए अभयसिंह रोडला ने बताया कि कर्मचारी चयन आयोग की स्थापना 1977 में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं उनके अधीनस्थ कार्यालयों में ग्रुप 'बी' के सभी पदों व ग्रुप सी के गैर तकनीकी पदों पर अधिकारियों-कर्मचारियों की नियुक्ति प्रक्रिया को संस्थागत रूप देने के उद्देश्य से की गई। इसके अलावा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा पदोन्नति हेतु विभिन्न विभागीय परीक्षाओं का आयोजन भी किया जाता है। आयोग द्वारा आयोजित की जाने वाली संयुक्त स्नातक स्तरीय (CGL) परीक्षा के बारे में जानकारी देते हुए अभयसिंह ने परीक्षा के लिए आवश्यक शैक्षणिक योग्यताएं, आयु सीमा, परीक्षा योजना, प्रश्नपत्रों की संख्या व स्वरूप, अंकन प्रणाली, आवेदन की प्रक्रिया आदि के बारे में बताया। इसके पश्चात रणजीत सिंह आलासन ने संयुक्त उच्च माध्यमिक स्तरीय (CHSL) परीक्षा के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए परीक्षा की योजना, उसकी अर्हताओं आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। आगे उन्होंने परीक्षा की तैयारी की रणनीति पर चर्चा करते हुए बताया कि अभ्यर्थी को सर्वप्रथम विषय की मूल अवधारणाओं को मजबूत कर लेना चाहिए। जैसे गणित के किसी भी टॉपिक के मूल सूत्रों को रटने की बजाय अच्छे से समझ लेवें, अंग्रेजी में ग्रामर को अच्छे से तैयार करें। इसी प्रकार गत वर्षों के प्रश्नपत्रों को हल करने तथा मॉक टेस्ट में भाग लेने के महत्त्व को भी उन्होंने रेखांकित किया। साथ ही उन्होंने असफलता से निराश न होकर लगातार प्रयत्न करते रहने की सलाह दी। इसी प्रकार बाबू सिंह बालावत ने एसएससी परीक्षा की तैयारी के संबंध में अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि इस परीक्षा में समय नियोजन का बहुत अधिक महत्त्व है। इसके लिए अभ्यर्थी को अभ्यास पर विशेष जोर देना चाहिए। उन्होंने परीक्षा की तैयारी के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के बारे में बताते हुए उन्हें पढ़ने का सही तरीका भी समझाया। साथ ही उन्होंने परीक्षा की तैयारी में सहायक डिजिटल माध्यमों यथा- यूट्यूब चैनल, एप्लीकेशन आदि की जानकारी भी प्रदान की। आगे उन्होंने एसएससी CGL परीक्षा के माध्यम से भरे जाने वाले पदों की संक्षिप्त जानकारी देते हुए उनकी प्राथमिकता का निर्धारण करते समय ध्यान रखे जाने योग्य बातों के बारे में बताया।

इसी प्रकार लोकेन्द्र सिंह राठौड़ ने एसएससी परीक्षा की तैयारी में कोचिंग की भूमिका पर चर्चा करते हुए बताया कि कोचिंग सेंटर अभ्यर्थी के कमजोर पक्ष को मजबूत बनाने के साथ ही तैयारी के लिए अनुकूल वातावरण भी उपलब्ध करवाते हैं। साथ ही उन्होंने अभ्यर्थियों द्वारा कोचिंग को ही पर्याप्त मानने की भूल से बचने की भी सलाह दी और स्वाध्याय के साथ निरंतर अभ्यास को सफलता के लिए आवश्यक बताया।

श्री राजपूत सभा जयपुर में अखंड ज्योति की स्थापना

श्री राजपूत सभा जयपुर में 8 जुलाई को कोरोना के कारण उत्पन्न वैश्विक समस्या से मुक्ति के लिए मां भगवती की स्तुति हेतु 51 दिवसीय अनुष्ठान प्रारम्भ किया गया। इस अवसर पर अखंड ज्योति प्रारम्भ की गई जो 51 दिन तक अखंड रूप से जलती रहेगी। साथ ही दुर्गा सप्तशती का पाठ प्रारम्भ किया गया। यह पाठ आगामी 51 दिनों तक प्रतिदिन प्रातः 9 बजे से 11 बजे तक किया जाएगा। इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा एवं उनकी कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित रहे।

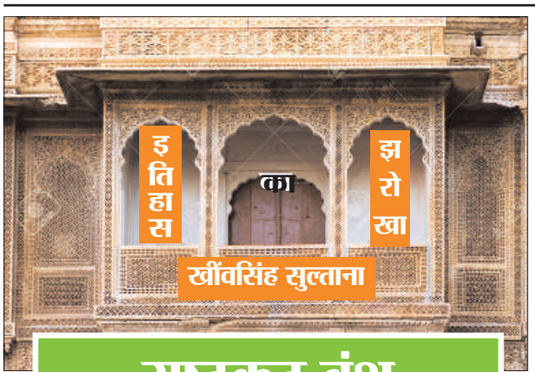

राष्ट्रकूट वंश

राष्ट्रकूट वंश के बारे जानकारी राष्ट्रकूट शासकों के अभिलेखों व दान पत्रों से मिलती है। राष्ट्रकूट शासकों के लेखों में इन्हें चन्द्रवंशी क्षत्रिय बताया गया है वहीं कुछ लेखों में यदुवंश की सात्यकि शाखा से संबंधित बताया गया है। छठवीं-सातवीं शताब्दी में दक्षिणापथ में राष्ट्रकूटों की विभिन्न शाखाएं सामन्त रूप में शासन कर रही थी इन्हीं में से एक शाखा दक्षिणापथ के उत्तर में (जो बाद में मान्य खेट के राष्ट्रकूट कहलाए) बादामी के चालुक्यों के सामन्त रूप में शासन कर रहे थे। राष्ट्रकूट वंश की स्वतंत्रता का जनक दन्तिदुर्ग था वह बादामी के चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय का सामन्त था। दन्तिदुर्ग ने चालुक्य शासक की ओर से अरबों के विरुद्ध युद्ध किया और उन्हें पराजित किया जिसके कारण चालुक्य शासक ने उसे 'पृथ्वी बल्लभ' की उपाधि से सम्मानित किया। कांची के पल्लवों के विरुद्ध हुए अभियान में उसने चालुक्य युवराज कीर्तिवर्मा को सहयोग दिया। उसने कर्नूल में श्री शैल के शासक को भी परास्त किया। इन सफलताओं ने दन्तिदुर्ग की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ा दिया। स्वतंत्र राज्य की चाह में उसने अपना विजय अभियान प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम नन्दिपुरी के गुर्जरों तथा नौसारी के चालुक्य को परास्त किया और उनके राज्यों पर अधिकार कर लिया, उसने मालवा पर भी आक्रमण किया और उज्जैन पर अधिकार कर लिया, उसने कौशल तथा कंलिग के राजाओं को भी परास्त किया। दन्तिदुर्ग की बढ़ती हुई शक्ति बादामी के चालुक्यों के लिए चुनौती थी जिसकी परिणिति चालुक्य शासक कीर्तिवर्मा द्वितीय व दन्तिदुर्ग के मध्य युद्ध के रूप में हुई जिसमें कीर्तिवर्मा को पराजय का सामना करना पड़ा। इस विजय के फलस्वरूप दन्तिदुर्ग महाराष्ट्र का स्वामी बन गया और उसने स्वतंत्र राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की। दन्तिदुर्ग ने 756 ई. तक शासन किया।

दन्तिदुर्ग के बाद उसका चाचा कृष्ण प्रथम शासक बना, वह भी दन्तिदुर्ग के समान एक महत्वाकांक्षी शासक था। उसके शासन काल के प्रारम्भ में ही उसके भतीजे कर्क ने लाट प्रदेश में विद्रोह कर दिया, कृष्ण ने कठोरतापूर्वक उसके विद्रोह का दमन किया। दन्तिदुर्ग ने यद्यपि महाराष्ट्र से चालुक्य शक्ति का अन्त कर दिया पर वह उनकी शक्ति का पूरी तरह उन्मूलन नहीं कर पाया। कीर्तिवर्मा द्वितीय ने कर्नाटक में पुनः शक्ति संगठित कर कृष्ण प्रथम पर आक्रमण किया, यह युद्ध 760 ई. में लड़ा गया। कृष्ण प्रथम ने चालुक्य शक्ति को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। कीर्तिवर्मा और उसके पुत्र युद्ध में मारे गए। इसके बाद उसने दक्षिणी कोंकण पर अधिकार कर वहां सवफुल्ल को सामन्त शासक बनाया जो शिलाहार वंश का संस्थापक था। कृष्ण प्रथम ने मैसूर के गंग शासक श्रीपुरुष को परास्त कर अपनी अधीनता में शासन कार्य सौंप दिया। उसने अपने पुत्र गोविन्द को वेंगी के पूर्वी चालुक्यों के विरुद्ध भेजा। वेंगी के चालुक्य शासक विष्णुवर्धन चतुर्थ ने बिना युद्ध किए ही राष्ट्रकूटों की अधीनता स्वीकार कर ली। वह दन्तिदुर्ग का योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध हुआ। अपनी विजयों से उसने दक्षिण में राष्ट्रकूटों को सर्वोच्च शक्ति बना दिया। अब राष्ट्रकूट साम्राज्य में सम्पूर्ण महाराष्ट्र और कर्नाटक तथा आंध्रप्रदेश का अधिकतर भाग शामिल था। उसने एक सुदृढ़ राज्य की स्थापना कर अपने उत्तराधिकारी के लिए उत्तर की राजनीति में भाग लेने का मार्ग प्रशस्त किया। विजेता होने के साथ ही वह निर्माता भी था, उसने एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया। वह एक धर्मनिष्ठ प्रजापालक शासक था। उसने 773 ई. तक शासन किया। **(क्रमशः)**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखामृत

कोरोना संकट के कारण उत्पन्न परिस्थिति के कारण वर्चुअल शाखा का प्रारंभ 13 मई को किया गया जो निरंतर जारी है। इसके माध्यम से वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी तथा अजीतसिंह जी धोलेरा द्वारा पूज्य श्री तनसिंह जी की पुस्तक 'साधक की समस्याएं' तथा 'गीता और समाजसेवा' पर चर्चा की जा रही है। 12 जुलाई से 29 जुलाई तक की शाखा में मिला मार्गदर्शन का विवरण प्रस्तुत है :

'साधक की समस्याएं' पुस्तक के आठवें प्रकरण 'जगत की असम्बद्धता' पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि विज्ञान की वर्तमान प्रगति से पूर्व बाह्य प्रकृति से मनुष्य का संघर्ष लंबे समय तक चलता रहा, परंतु मनुष्य के काल के अधीन होने से वह इस संघर्ष में लगातार हारता रहा, फिर भी उसने संघर्ष करना नहीं छोड़ा। मानव की इस संघर्ष की शक्ति ने ही विज्ञान को जन्म दिया और विज्ञान की सहायता से उसने बाह्य प्रकृति पर एक सीमा तक विजय भी प्राप्त कर ली। दुर्भाग्यवश संघर्ष के इस लंबे काल मे मानव ने अपनी अन्तर्प्रकृति को मित्र मानने की भूल कर दी जिसका लाभ उठाकर वह उस पर हावी हो गई। भारत में अन्तर्प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के जो अद्भुत प्रयोग ऋषि मुनियों द्वारा किये गए थे उन्हें विज्ञान की प्रारंभिक सफलताओं की चकाचौंध में निरर्थक समझ लिया गया। इससे हमने अपने पूर्वजों द्वारा संचित ज्ञान को खो दिया और मानव का संघर्ष एकपक्षीय बन कर रह गया। इस एकपक्षीय संघर्ष के कारण जो असंतुलन उत्पन्न हुआ उसने मानव जीवन में अनेकों असम्बद्धताओं को जन्म दिया। असम्बद्धता की इस समस्या के कारण हर मनुष्य ने स्वयं को एक पृथक इकाई समझकर अपनी कल्पनाओं के अनुसार जगत को मोड़ने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। इस प्रक्रिया में मानव ने शस्त्रों और विचारों के युद्धों को जन्म दिया परंतु असम्बद्धताएँ मिटने की अपेक्षा बढ़ती ही गई। रक्तपात और संहार से भयभीत व निराश होकर मानव ने असम्बद्धताओं से सहअस्तित्व और समझौते का मार्ग अपनाया। मानव द्वारा समझौते का यह मार्ग अपनाने का वास्तविक कारण उसकी जड़ता की अधीनता ही है क्योंकि इस प्रक्रिया में मानव ने अंतर्जगत की प्रकृति के साथ असम्बद्धता को स्वतः सिद्ध मान लिया। विश्व की विराटता और मानव की महानता में जो घनिष्ट सम्बन्ध है उसको न पहचान पाने से समूची मानव जाति में संवेगों और प्रवृत्तियों की एकता की बात भी मनुष्य समझ नहीं पाया। मानव को युग यंत्र का असहाय पुर्जा मान लेना मानव की प्रगति को अवरुद्ध करना है। सच्चा ज्ञान तो वही है जो जगत के साथ एकरसता और समन्वय का बोध मानव को करा सके। मानव जाति के इतिहास में एक सूत्रबद्धता है जिसका ज्ञान हमें तभी हो सकता है जब हमें यह विश्वास हो जाये कि हम सृष्टिकर्ता की अनोखी रचनाएं हैं। यद्यपि मानव चेतना को सुनिर्देशित करने के लिए जिस गहन भावबोध, दृष्टिकोण और प्रणाली की आवश्यकता है उसका मार्ग अभी बहुत उबड़ खाबड़ है। हमारी पीढ़ी का कार्य तो इस उबड़ खाबड़ता को समतल करने का है। ऐसा करके ही हम भावी पीढ़ी के बीच सूत्रबद्धता का दायित्व निभा सकते हैं। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो हमारा दर्शन केवल बौद्धिक कलाबाजी बनकर रह जायेगा और वर्तमान की उपेक्षा भविष्य के लिए अप्रयोजनीय बन जाएगी। महावीर सिंह जी ने आगे चर्चा करते हुए बताया कि जगत की इन असम्बद्धताओं का एकमात्र हल आध्यात्मिक साधना है। शारीरिक साधना से भौतिक एकता, मानसिक साधना से वैचारिक एकता तथा आध्यात्मिक साधना से तात्विक एकता प्राप्त होती है। तात्विक एकता अनुभव जगत में घटित होती है और यही मानव जगत की एकता का स्थायी और सुनिश्चित आधार बनने में सक्षम है। संघ की साधना द्वारा हम जिस संगठन का निर्माण कर रहे हैं वह एकांगी नहीं है अपितु भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक एकताओं को सूत्रबद्ध करने का मार्ग है। संघ की आध्यात्मिक साधना का अर्थ है अपने भीतर सोए हुए देवत्व को जगाना और उससे सम्बन्ध स्थापित करना। इस संबंध का माध्यम श्रद्धा है। हमारी आध्यात्मिक एकता अन्तर्विज्ञान पर आधारित है। सांघिक साधना आत्मज्ञान और वस्तुज्ञान में समन्वय पैदा करती है और परमसत्ता से साजात्य और साधर्म्य संबंधों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करती है। आगे उन्होंने बताया कि वस्तुज्ञान पर अधिक निर्भर होने के कारण हम संघ साहित्य को ठीक से समझ नहीं पाते। इसके लिए संघ साहित्य को बार-बार पढ़कर उस पर चिन्तन-मनन करना अत्यावश्यक है। बाह्य ज्ञान ही अन्तर ज्ञान को प्राप्त करने का साधन बनता है। इन दोनों में परस्पर समन्वय है न कि अंतर्विरोध। अंतर्विरोध तो हमारे दृष्टिकोण में दोष आने के कारण ही उत्पन्न होता है। आध्यात्मिक ज्ञान की जागृति में ही समाजों व राष्ट्रों के परस्पर संघर्ष व विश्वशांति की समस्याओं का स्थाई हल भी निहित है। यह कोई नवीन प्रयोग नहीं है अपितु भारत ने इस क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व किया था। किन्तु विगत कुछ शताब्दियों की गुलामी ने इस क्षेत्र में भारत की श्रेष्ठता को और अधिक उन्नत नहीं होने दिया। भारतीयता और भारतीय जीवनदर्शन के पुनरोदय में मानव की सभी समस्याओं का हल निहित है और सांघिक साधना का भी यही उद्देश्य है।

इसी प्रकार पुस्तक के नवें प्रकरण 'विज्ञान से दर्शन' पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि सांघिक साधना पूर्णतः वैज्ञानिक है। विज्ञान का अर्थ है व्यवस्थित और क्रमबद्ध ज्ञान। संघ की प्रणाली के वैज्ञानिक होने का अर्थ है कि इन्हीं नियमों का पालन करके कोई भी वही परिणाम निकाल सकता है जो संघ ने प्राप्त किए हैं। गणितज्ञ और दार्शनिक के दृष्टिकोण में अंतर को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि गणितज्ञ संख्याओं के योग के सामान्य स्वरूप और नियम को देखता है परंतु दार्शनिक समस्त संख्याओं में मूलभूत एकता को देखता है। सम्पूर्ण जगत के आधार में जो शाश्वत एकता है उसे विज्ञान तभी समझ सकता है जब वह दार्शनिक का दृष्टिकोण अपना लेगा। इस शताब्दी का यह दुर्भाग्य रहा है कि विज्ञान और दर्शन में ऐसी भिन्नता मान ली गई है कि उन दोनों के मिलने से एक दूसरे में जो परिपक्वता और पुष्टता आ सकती थी उसका मार्ग ही अवरुद्ध हो गया है। दर्शन और विज्ञान एक दूसरे के बिना मानव की सेवा करने में विफल सिद्ध हो रहे हैं। हमारी प्रणाली भी विज्ञान से ही प्रारम्भ होती है किन्तु अपनी पूर्णता के लिए उसे दर्शन का सहयोग लेना अनिवार्य है। संघ का प्राथमिक सूत्र है- एक से अनेक होना। यह वैज्ञानिक सूत्र है परंतु इस अनेकता को एकता में बांधने का कार्य दर्शन द्वारा ही संभव है। संघ का कार्य बिना सहकारी भावना के सहकारिता का उल्टा प्रयोग है क्योंकि इस वैज्ञानिक युग की ऐसी ही मांग है। संघ की प्रणाली विज्ञान से प्रारम्भ होकर दर्शन की ओर आगे बढती है क्योंकि विज्ञान द्वारा जन्मी भौतिक एकता दर्शन की तात्विक एकता के अभाव में निरर्थक ही रहेगी। सच्ची एकता लाने की क्षमता अकेले विज्ञान में नहीं है क्योंकि वह व्यक्तियों की समानता को स्वीकार नहीं कर सकता। इस कमी को दर्शन दूर कर सकता है परंतु विज्ञान की दर्शन से असहमति से साधनागत समस्याएं पैदा होती है। एक व्यक्ति की वेदना समस्त मानवता की वेदना हो सकती है, इस सत्य को स्वीकार न कर पाने के कारण विज्ञान व्यक्ति व समाज के बीच की दूरियों को समाप्त करने में सहयोगी नहीं बन सकता। पश्चिमी सभ्यता में जो एकताएँ पैदा हुई उनका स्वरूप वैज्ञानिक ही रहा है इसीलिए इन एकताओं ने रक्तरंजित क्रांतियां करके उन्हीं क्रांतियों के कारण आत्महत्या कर ली। पश्चिम की कोई भी क्रांति मानव एकता के लिए स्थायी आधार प्रदान नहीं कर सकी है। वास्तव में आज मानव को जनक, श्रीकृष्ण, महावीर और बुद्ध की धार्मिक क्रांतियों की आवश्यकता है।

शाखा की अगली कड़ियों में पुस्तक के दसवें प्रकरण 'श्रद्धा का भ्रम' पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि साधना पथ पर चलते हुए साधक को अपनी उपलब्धियों के सम्बन्ध में भ्रम भी हो जाता है। अनेक साधक अपने आपको श्रद्धा सम्पन्न समझ लेते हैं यद्यपि उनमें वास्तविक श्रद्धा का अभाव होता है। ऐसी भूल साधक द्वारा निष्कर्ष निकालने की जल्दबाजी के कारण होती है। इस जल्दबाजी के कारण साधक आदर्श की कल्पना को यथार्थ मान बैठता है। मानसिक चिंतन द्वारा आदर्श के मानसिक साक्षात्कार की प्रक्रिया में वह मान लेता है कि उसने आदर्श को यथार्थ में सिद्ध कर लिया है। अपनी इस मान्यता पर अन्यों को विश्वास न करते देख कर उसे क्षोभ होता है और इस कारण वह साधना की गहराई में पहुंचने की अपेक्षा अपनी काल्पनिक प्राप्तियों की पुष्टि के लिए चिंतित रहने लगता है। ऐसे में साधना के नवीन प्रयोगों से साधक अछूता रह जाता है। साधक जीवन में ऐसी समस्याएं स्वाभाविक है। इसके लिए साधक को अपने आत्मसमर्पण के दावे का विश्लेषण करना चाहिए। आत्मचिन्तन द्वारा ही यह विश्लेषण संभव है। हमारी साधना में बलिदान की परंपरा कोई क्षणिक उपाय न होकर सचेतन और निरंतर चेष्टा है जो अंत तक चलती है। सांघिक साधना में बलिदान का अर्थ विसर्जन नहीं बल्कि रचनात्मक विकास के रूप में होने वाला स्वरूप परिवर्तन है। साधक जब त्याग की अपेक्षा संचय को महत्ता प्रदान करने लगता है तब वह स्वार्थ के मार्ग पर चल पड़ता है। हमारी साधना में स्वार्थ मृत्यु का ही प्रगट रूप है। यद्यपि साधना की प्रारंभिक अवस्थाओं में कर्मफल का आकर्षण न हो तो यत्किंचित बलिदान भी संभव नहीं होता किन्तु आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में प्रवेश पाने के लिए सभी प्रकार के स्वार्थों से मुक्त होना आवश्यक है।

शाखा की अगली कड़ी में चर्चा को आगे बढ़ते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने कहा कि साधना के उच्चतर स्तर में प्रवेश पाने के लिए सही अवसर को सही समय पर पहचानने की आवश्यकता है। मानसिक संकल्प कभी भी श्रद्धा का स्थान नहीं ले सकता क्योंकि श्रद्धा मन-बुद्धि के क्षेत्र से परे है, वह आत्मा के जागरण की प्रथम क्रिया है। अज्ञान और संशय के पूरी तरह नष्ट होने पर ही श्रद्धा का उदय होता है। जो भी साधना द्वारा ऊर्ध्व स्थितियों में पहुंचे हैं, उन सभी ने श्रद्धा का महत्त्व प्रतिपादित किया है। श्रद्धा ऐसी शक्ति है जिसे असत्य अथवा संशय स्पर्श भी नहीं कर सकता। श्रद्धा मुक्ति का द्वार है, उसकी प्राप्ति के लिए सभी बंधनों से मुक्त होना आवश्यक है। जो भी संशय हमारे मन में आते हों, उन्हें बल पूर्वक दबाना अथवा उनसे संघर्ष करना गलत मार्ग है। संघर्ष तो श्रद्धा से ही करना चाहिए तभी श्रद्धा का स्वरूप स्पष्ट हो सकेगा। किसी घटना, उपकार अथवा कर्मनिष्ठा से उपार्जित श्रद्धा स्वावलम्बी नहीं होती। अशर्त श्रद्धा ही सच्ची श्रद्धा है।

वर्चुअल शाखा में पूज्य श्री तनसिंहजी की पुस्तक 'गीता और समाजसेवा' के प्रकरण 'संस्कारमयी कर्म प्रणाली पर आगे चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा ने बताया कि गीता में यज्ञ का अर्थ केवल भौतिक हवन करना नहीं है, अपितु वह कर्म को कर्म में भस्म करने की क्रिया को यज्ञ बताती है। वैदिक कर्मकांडों को भी गीता स्वीकार करती है परन्तु इस शर्त के साथ कि उनको निष्काम भाव से किया जाये। गीता ने यज्ञ की उत्पत्ति कर्म से बताई है, साथ ही यह भी बताया है यज्ञ के निमित्त किए गए कर्म से दोष उत्पन्न नहीं होता है क्योंकि किसी भी कर्म का मूल्य उसके बाह्य स्वरूप से नहीं अपितु उसके पीछे की भावना से आंका जाता है। गीता ने निष्क्रियता को मृत्यु के समान माना है और इसीलिए कर्मयोग को प्रतिष्ठित किया है। प्रकृति के वश होकर प्रत्येक मनुष्य को कर्म में लगना ही पड़ता है। कर्म त्याग भी एक प्रकार से कर्म ही है अतः कोई भी बिना कर्म किये रह ही नहीं सकता है। कर्मों को भगवान के अर्पण करके फल व आसक्ति का त्याग कर देने से कर्म हमें लिपायमान नहीं करते। सामाजिक कार्यकर्त्ता भी समाज-जागरण का कर्म समाज के निमित्त करता है अतः यदि यह कर्म आसक्ति रहित व फल की इच्छा से रहित हो तो वह बंधन उत्पन्न नहीं करता। यही प्रवृत्ति मार्ग है जिसका गीता समर्थन करती है। निवृत्ति मार्ग तर्क की दृष्टि से ठीक लगता है किंतु वास्तव में वह दोषपूर्ण है क्योंकि वह अव्यवहारिक भी है और उससे भगवान के सृष्टिगत उद्देश्य में भी बाधा पड़ती है। समाज जागरण के लिए समाज के सामान्य व्यक्तियों को ईश्वर परायण बनाना, उन्हें समत्व बुद्धि योग की शिक्षा देना वर्तमान समय में एक कठिन कार्य है। श्री क्षत्रिय युवक संघ यही कार्य कर रहा है। ऐसे कठिन कार्य को करने के लिए एक ऐसी प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें स्थूल कर्मों को करने से ही सूक्ष्म बुद्धि योग का उदय हो सके। पूज्य श्री तनसिंह जी ने संघ के रूप में ऐसी ही प्रणाली हमें दी है, जिसे हम सामूहिक संस्कारमयी प्रणाली कहते हैं। संघ के शिविरों में सामूहिकता का जो अभ्यास हम करते हैं वह इसी प्रणाली का अंग है। यह अभ्यास हमारे व्यक्तित्व पर जो सूक्ष्म प्रभाव डालता है उसी को संस्कार कहते हैं। खेल-खेल में हम हार-जीत के विचार से ऊपर उठ जाते हैं, जीवन के गंभीर सिद्धांतों को सहज ही अपने जीवन का अंग बना लेते हैं, यह संस्कार निर्माण की ही प्रक्रिया है। पूज्य श्री तनसिंह जी ने हमें जो अद्भुत मार्ग दिया है उसकी गहराई में उतरने पर हम ज्ञान के मोती प्राप्त कर सकेंगे, परंतु डूबने के भय से यदि किनारे पर ही बैठे रह गये तो कुछ भी हाथ नहीं आएगा। उन्होंने आगे बताया कि छोटी-छोटी बातों में ही महान परिवर्तन लाने की संभावना छिपी होती है। नित्य, नैमित्तिक और काम्यकर्मों के समन्वय को संभव बनाने वाली प्रणाली से ही समाज में जागृति लाई जा सकती है। गीता ने कर्म के पांच हेतु बताए हैं- अधिष्ठान, कर्ता, करण, विविध प्रकार की चेष्टाएँ और दैव। इन पांचों में पुरुष का स्थान नहीं है अतः जो सब कुछ करते हुए भी यह जान लेता है कि करने वाला वह नहीं है, वही गीता के अनुसार सांख्ययोगी है। ज्ञान की अग्नि ही कर्म के दोषों को जलाने में सक्षम है। कर्म और ज्ञान एक दूसरे के पूरक है क्योंकि कर्म की स्थूलता में ज्ञान की सूक्ष्मता आवृत्त होती है। बिना ज्ञान के कर्म निरर्थक है और बिना कर्म के ज्ञान पाखंड बन जाता है। चरित्रहीन ज्ञानी स्वयं के साथ ही समाज के लिए भी घातक होते हैं। अतः समाज के गुण-स्वभाव के अनुसार उसे कर्मों का अभ्यास करवाना तथा उसमें आसक्ति उत्पन्न न होने देना, यही ज्ञान के अवतरण का सही मार्ग है। सात्विकता की सूक्ष्मता और निरंतरता व नियमितता की स्थूलता को अपने कार्यक्रमों में शामिल करने वाली संस्था अथवा विचारधारा ही समाज की सच्ची सेवा लंबे समय तक कर सकती है।

शाखा की अगली कड़ियों में पुस्तक के 'श्रद्धा और तर्क' प्रकरण पर चर्चा करते हुए अजीतसिंह जी ने बताया कि गीता एक खुली पुस्तक होते हुए भी गोपनीय है क्योंकि इसके ज्ञान के सच्चे स्वरूप का वही दर्शन कर सकता है जो इसकी गहनता में प्रवेश पा जाये। हजारों वर्ष पूर्व इसकी रचना हुई परंतु इसमें आज की और भविष्य की भी सभी समस्याओं का हल दृष्टिगोचर होता है, यह गीता की अनूठी विशिष्टता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के परम कल्याणकारी ज्ञान को गोपनीय क्यों बनाया, इसका उत्तर देते हुए बताया है कि ज्ञान उपयुक्त पात्र को ही प्राप्त होता है। गीता का ज्ञान भी श्रद्धावान, तत्पर और जितेन्द्रिय व्यक्ति ही प्राप्त कर सकता है। कुपात्र को ज्ञान देने की बात अस्वीकार करते हुए गीता कहती है कि तप रहित, भक्ति रहित, सुनने की इच्छा से रहित और मेरी निंदा करने वाले को यह ज्ञान नहीं कहना चाहिए। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जो हमारा अत्यंत प्रिय होता है उसे ही हम अतिगोपनीय बात भी कह सकते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रतिभाएं

भुणास (नागौर) निवासी दातारसिंह पुत्र शैतानसिंह ने मेड़तासिटी में अध्ययनरत रहते हुए 12वीं विज्ञान वर्ग में 88.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

भुणास (नागौर) निवासी दिलीपसिंह पुत्र पर्वतसिंह ने कुचामन सिटी में अध्ययनरत रहते हुए 12वीं विज्ञान वर्ग में 89.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

ढूंढ़िया (नागौर) निवासी मूमल कंवर पुत्री भवानीसिंह ने बागोट में अध्ययनरत रहते हुए 12वीं विज्ञान वर्ग में 83.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पीपली (अलवर) निवासी पिंकी कंवर पुत्री सुमेर सिंह चौहान ने 12वीं विज्ञान वर्ग 84.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

कंवलाद (नागौर) निवासी मोनू कंवर पुत्री शिंभुसिंह ने बागोट में अध्ययनरत रहते हुए 12वीं विज्ञान वर्ग में 84.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

गुगरयाली (नागौर) निवासी प्रेरणा कंवर पुत्री सोनसिंह ने दुगोली में अध्ययनरत रहते हुए 12वीं विज्ञान वर्ग में 88.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दुजार (नागौर) निवासी धीरज कंवर पुत्री दौलत सिंह ने लाडनूं में अध्ययनरत रहते हुए 12वीं विज्ञान वर्ग में 88.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

नया सांकड़ा (जैसलमेर) निवासी कैलाश कंवर पुत्री कंवरसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 92.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

राजगढ़ (जैसलमेर) निवासी रावलसिंह भाटी पुत्र बाबूसिंह ने गुड़ामालानी में अध्ययनरत रहते हुए 12वीं विज्ञान वर्ग में 82.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सांकड़ा निवासी संघ के स्वयं सेवक मैराजसिंह के पुत्र कुलवीर सिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 90.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पिथापुरा (सिरोही) के सुखवर्धन सिंह पुत्र राजेन्द्रसिंह देवड़ा ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 87 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

भालणी (जालोर) निवासी अमरजीतसिंह पुत्र भंवरसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 92.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने संघ के दो शिविर किए हैं।

चकवा (अजमेर) निवासी कुलदीपसिंह पुत्र गोरधनसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 93.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सेखाला (जोधपुर) निवासी महेन्द्रसिंह पुत्र पर्वतसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 82.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने संघ के अनेक शिविर किए है एवं फलौदी में नियमित शाखा का स्वयंसेवक है।

उदट (जोधपुर) निवासी दीपसिंह पुत्र विशालसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 94.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। ये भी फलौदी नियमित शाखा के स्वयंसेवक है।

मोढा (जैसलमेर) निवासी प्रवीणसिंह पुत्र पीलसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 86.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दुलरासर (चुरू) निवासी प्रति शेखावत पुत्री सार्दुलसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में नोखा में अध्ययनरत रहते हुए 87.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। शार्दुलसिंह संघ के स्वयंसेवक हैं।

रामदेवरा (जैसलमेर) निवासी गोपालसिंह पुत्र माधोसिंह ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 83.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

(पृष्ठ छह का शेष)

शाखामृत - किन्तु जो हमें प्रिय लगता है हम भी उसको प्रिय लगे यह आवश्यक है अन्यथा पारस्परिक समन्वय नहीं बनता। समाज सेवक को समाज का प्रत्येक व्यक्ति प्रिय लगता है परंतु यदि समाज की श्रद्धा समाज सेवक में न हो तो समाजसेवक का श्रम व्यर्थ जाएगा। अतः समाजसेवक को समाज में अपने प्रति श्रद्धा उत्पन्न करना आवश्यक है। गीता श्रद्धा को अत्यंत महत्त्व देते हुए कहती है कि श्रद्धा रहित व्यक्ति परमतत्व को प्राप्त न करके संसार चक्र में फंसे रहते हैं। बिना श्रद्धा के किए हुए दान, तप, यज्ञ आदि को भी गीता व्यर्थ बताती है। अतः जिस कार्य को हम करते हैं उसमें हमारा पूर्ण विश्वास होना चाहिए। यदि हम स्वयं अपने कार्य में संशय करते हैं तो हमारा विनाश होना निश्चित है। संशय की उत्पत्ति तर्क से होती है और ज्ञान की उत्पत्ति श्रद्धा से होती है। तर्क का संबंध मस्तिष्क से है तथा श्रद्धा का सम्बन्ध हृदय से है। यदि कोई व्यक्ति केवल तर्क के आधार पर अपनी विचारधारा को समाज में प्रसारित करना चाहता है तो वह सफल नहीं हो सकता क्योंकि तर्क सखाभाव का शत्रु है। तर्क से सामने वाले को पराजित तो किया जा सकता है परन्तु उसका हृदय नहीं जीता जा सकता। श्रद्धा के अभाव में केवल तर्क पर किया जाने वाला कार्य व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को जन्म देता है। अतः हमें श्रद्धा के सहारे ही आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि इसी से हमारी साधना सत्वोन्मुखी बन सकती है। बुद्धि से परे जो तत्व है उन्हें श्रद्धा से ही जाना जा सकता है। इतना होने पर भी गीता तर्क को सर्वथा अस्वीकार नहीं करती अपितु तर्क व श्रद्धा के समन्वय का मार्ग प्रशस्त करती है।

इसी प्रकार वर्चुअल शाखा की अगली कड़ियों में पुस्तक के बारहवें प्रकरण 'व्यक्तिवाद' पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि प्रत्येक मनुष्य अपनी प्रकृति से परवश होकर कार्य करता है। प्रकृति की इस दासता से मुक्ति पाने के लिए मानव लंबे समय से संघर्ष करता आ रहा है। मानव अपनी मूल प्रवृत्तियों के अधीन होकर माया के बंधनों से मुक्त नहीं हो पाता है। त्रिगुणात्मक प्रकृति विकाररहित आत्मा को विभिन्न बंधनों से बांधती है जिससे वह जड़ता व अज्ञान से ग्रसित हो जाती है। आत्मप्रदर्शन की प्रवृत्ति भी ऐसी ही एक प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति ही विकृत होकर व्यक्तिवाद और अहंभाव का रूप लेती है। वर्तमान समय में व्यक्तिवाद की भावना अत्यंत बलवती होकर मानव की जड़ता को और अधिक घनीभूत कर रही है। भारतीय संस्कृति का स्वरूप समन्वयात्मक है अर्थात वह व्यक्ति व समाज के पारस्परिक कल्याण व विकास की व्यवस्था करती है। समाज जागरण के लिए हमें भी व्यक्ति के अहंभाव और समाज के व्यक्तिवाद में समन्वय स्थापित करना पड़ेगा। समाज में हर व्यक्ति की अपनी महत्त्वाकांक्षाएं होती है परंतु सभी की सभी महत्त्वाकांक्षाएं पूरी होना संभव नहीं होती अतः व्यक्ति-व्यक्ति, व्यक्ति-समाज, समाज-समाज और राष्ट्र-राष्ट्र में संघर्ष उत्पन होता है। इस समस्या का मूल कारण व्यक्तिवाद और अहंभाव ही है। व्यक्तिवाद की भावना रहते हुए सच्चे संगठन का निर्माण असंभव है। अतः समाजसेवक को व्यक्तिवाद से सदैव सतर्क रहना चाहिए। गीता व्यक्तिवाद की भावना का खंडन करते हुए कहती है कि जो अहंवादी न हो, आसक्तिरहित हो, धैर्य व उत्साह से पूर्ण हो तथा हर्ष शोक आदि विकारों से रहित हो वही कर्ता सात्विक है। अर्जुन ने जब युद्ध से पीछे हटना चाहा तो उसके पीछे यह अहंभाव ही था कि मैं ऐसा नहीं करूंगा। भगवान श्रीकृष्ण ने उसके अहंभाव को नष्ट करके उसे पुनः कर्त्तव्य कर्म में प्रवृत्त किया। आगे उन्होंने बताया कि गीता कर्मेन्द्रियों को हठपूर्वक रोकने वाले को मिथ्याचारी कहती है क्योंकि प्रकृति स्वयं अपने गुणों से सभी कार्यों को संपादित करती है। मनुष्य केवल उसका श्रेय लेता है। मनुष्य का अहंकार ही उसको कर्ता मानने की भूल करता है जबकि वह वास्तविक कर्ता नहीं है। प्रकृति के विरुद्ध की गई सभी चेष्टाएँ व्यर्थ है। जो इस बात को जान लेता है कि वह तो केवल माध्यम है वही गीता के तत्वज्ञान को समझ सकता है। इस बात को न समझकर जो अहं और अज्ञान से मोहित होता है वह बार-बार अधम योनियों में जन्म पाता है। गीता कर्तापन की भावना के त्याग को ही वास्तविक कर्मयोग घोषित करती है। व्यक्तिवाद और अहंभाव को गीता ने आसुरी प्रवृत्ति माना है तथा इसके विरोध में सांख्ययोग को प्रतिष्ठित किया है। सांख्ययोग को अपनाकर ही विपरीत परिस्थितियों में भी समाज सेवक कार्य कर सकता है क्योंकि तब सफलता-असफलता का दायित्व हम पर नहीं हमारी सत्ता के स्वामी पर होता है।

वेबिनार : सूचना तकनीकी की विभिन्न धाराओं का परिचय

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा विभिन्न विषयों पर ऑनलाइन कार्यशालाओं के आयोजन के क्रम में 11 जुलाई, 2020 (शनिवार) को 'सूचना तकनीकी (इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी) के विभिन्न क्षेत्रों का परिचय' विषय पर वेबिनार का आयोजन हुआ। यह वेबिनार युवाओं को सूचना तकनीकी से परिचित करवाने के लिए प्रारम्भ की गई श्रृंखला की दूसरी कड़ी थी। सर्वप्रथम पवन सिंह बिखरनिया ने चर्चा प्राम्भ करते हुए बताया कि कंप्यूटर इंजिनीरिंग के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए प्रोग्रामिंग में पारंगत होना अनिवार्य नहीं है। कई ऐसे क्षेत्र है जिनमें प्रोग्रामिंग की जानकारी के बिना भी सफलता प्राप्त की जा सकती है। उदाहरण स्वरूप उन्होंने GIS (ज्योग्राफिकल इनफार्मेशन सिस्टम) तकनीकी की जानकारी देते हुए उसके विभिन्न पहलुओं को सामने रखा। इसके पश्चात मेक्सिको से देवेन्द्र सिंह आमली ने सूचना तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों की सामान्य जानकारी देते हुए बताया कि उनमें किस प्रकार कैरियर बनाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि कम्प्यूटर विज्ञान के अतिरिक्त इंजीनियरिंग, मेडिकल, फाइनेंस, बिजनेस आदि विभिन्न पृष्ठभूमि के व्यक्ति सूचना तकनीकी (IT) के क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं। प्रोग्रामिंग, सॉफ्टवेयर टेस्टिंग, क्लाउड कंप्यूटिंग, आर्टिफिशल इंटेलिजेंस, बिजनेस एनालिस्ट जैसे सूचना तकनीकी के तेजी से बढ़ते क्षेत्रों की मूलभूत जानकारी भी उन्होंने प्रदान की। तत्पश्चात कुवैत से रविन्द्र सिंह नेवरी ने GIS (ज्योग्राफिकल इनफार्मेशन सिस्टम) की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि यह संभावनाशील क्षेत्र है जिसमें युवा एक बेहतर कैरियर बना सकते हैं। उन्होंने GIS के लिए उपलब्ध कोर्सेज, शिक्षण संस्थानों, उनकी प्रवेश प्रक्रिया व अर्हताएं, जॉब प्रोफाइल, क्षेत्र तकनीक के अनुप्रयोग आदि की जानकारी साझा करते हुए बताया कि यह मुख्यतः लोकेशन आधारित डेटा के विश्लेषण की तकनीक है। उन्होंने भारत में सरकारी योजनाओं में इस तकनीक के अनुप्रयोग को भी उदाहरण देकर समझाया। इसके पश्चात नरेंद्र सिंह ने वेबिनार के लाइव प्रसारण के समय फेसबुक पेज पर पूछे गए प्रश्नों का समाधान किया। साथ ही सूचना तकनीकी विषय पर प्रति सप्ताह वेबिनार के आयोजन का भी निर्णय किया गया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

लीलसिंह बईया

देवीसिंह नाथड़ाऊ

हमारे साथी
लीलसिंह बईया
(जैसलमेर),
देवीसिंह नाथड़ाऊ
(जोधपुर),
देवेन्द्रसिंह सगरा
(जोधपुर),
देवेन्द्रसिंह तितरड़ी
(उदयपुर),
दिलीपसिंह कुमास जागीर (सीकर),
व
लक्ष्मणसिंह सरेचा
(जोधपुर),
के **उपनिरीक्षक**
से पदोन्नत होकर
निरीक्षक बनने पर
हार्दिक बधाई एवं
उज्ज्वल भविष्य की
शुभकामनाएं।

देवेन्द्रसिंह सगरा

देवेन्द्रसिंह तितरड़ी

दिलीपसिंह कुमास जागीर

लक्ष्मणसिंह सरेचा

शुभेच्छू :

श्री जितेन्द्रसिंह गिलाकौर (RPS), श्री सज्जनसिंह सांकड़ा (RPS), श्री जेठूसिंह कुशीप (RPS), श्री भवानीसिंह बस्तवा (RPS), श्री रूपसिंह (RPS), श्री सवाईसिंह बिजेरी (CI), श्री सवाईसिंह सगरा (CI), श्री राणसिंह बीजराड़ (CI), श्री परबतसिंह सत्याया (CI), श्री मूलसिंह बैतीणा (CI), श्री जितेन्द्रसिंह शेखावत (CI), श्री दिलीपसिंह झाला (CI), श्री रतनसिंह चौहान कंथारिया (CI), श्री सुमेरसिंह बालेसर (CI), श्री राजवीरसिंह (CI), श्री विश्वजीत सिंह (CI), श्री सुल्तानसिंह मते का तला (SI), श्री हमीरसिंह ताणु (SI), श्री गिरवरसिंह बडोड़ागांव (SI), श्री चन्द्रसिंह धोलिया बारू (SI), श्री समंदरसिंह उंठवालिया (JVVNL) एवं समस्त मित्रगण।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org